लेखक-परिचय

शिवपूजन सहाय

शिवपूजन सहाय का जन्म सन् 1893 में गाँव उनवाँस, ज़िला भोजपुर (बिहार) में हुआ। उनके बचपन का नाम भोलानाथ था। दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने बनारस की अदालत में नकलनवीस की नौकरी की। बाद में वे हिंदी के अध्यापक बन गए। असहयोग आंदोलन के प्रभाव से उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। शिवपूजन सहाय अपने समय के लेखकों में बहुत लोकप्रिय और सम्मानित व्यक्ति थे। उन्होंने **जागरण**, **हिमालय**, **माधुरी**, **बालक** आदि कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का संपादन किया। इसके साथ ही वे हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिका **मतवाला** के संपादक-मंडल में थे। सन् 1963 में उनका देहांत हो गया।

वे मुख्यत: गद्य के लेखक थे। **देहाती दुनिया**, **ग्राम सुधार**, **वे दिन वे लोग**, **स्मृतिशेष** आदि उनकी दर्जन भर गद्य-कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। **शिवपूजन रचनावली** के चार खंडों में उनकी संपूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हैं। उनकी रचनाओं में लोकजीवन और लोकसंस्कृति के प्रसंग सहज ही मिल जाते हैं।

© NCERT not to be republished

मधु कांकरिया

मधु कांकरिया का जन्म सन् 1957 में कोलकाता में हुआ। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया, साथ ही कंप्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा भी।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—**पत्ताखोर** (उपन्यास), **सलाम आखिरी, खुले गगन के लाल सितारे, बीतते हुए, अंत में ईशु** (कहानी-संग्रह)। उन्होंने कई सुंदर यात्रा-वृत्तांत भी लिखे हैं। मधु कांकरिया की रचनाओं में विचार और संवेदना की नवीनता मिलती है। समाज में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याएँ जैसे—अप संस्कृति, महानगर की घुटन और असुरक्षा के बीच युवाओं में बढ़ती नशे की आदत, लालबत्ती इलाकों की पीड़ा आदि उनकी रचनाओं के विषय रहे हैं।

अज्ञेय

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म सन् 1911 में उ.प्र. के देवरिया जिले के कसिया (कुशीनगर) इलाके में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा जम्मू-कश्मीर में हुई और बी.एस.सी. लाहौर से की। क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेने के कारण अज्ञेय को जेल भी जाना पड़ा।

साहित्य एवं पत्रकारिता को पूर्णत: समर्पित अज्ञेय ने देश-विदेश की अनेक यात्राएँ कीं। उन्होंने कई नौकरियाँ कीं और छोड़ीं। आज़ादी के बाद की हिंदी कविता पर अज्ञेय का व्यापक प्रभाव है। कविता के अलावा उन्होंने कहानी, उपन्यास, यात्रा-वृत्तांत, निबंध, आलोचना आदि अनेक विधाओं में भी लेखन किया है।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—**भग्नदूत**, **चिंता**, **अरी ओ करुणा प्रभामय**, **इंद्रधनु रौंदे हुए ये, आँगन के पार द्वार** (काव्य-संग्रह), **शेखर : एक जीवनी**, **नदी के द्वीप** (उपन्यास), **विपथगा**, **शरणार्थी**, **जयदोल** (कहानी-संग्रह), **त्रिशंकु**, **आत्मनेपद** (निबंध), **अरे यायावर रहेगा याद** (यात्रा-वृत्तांत)। अज्ञेय द्वारा संपादित **तार सप्तक** सहित चार सप्तकों का समकालीन हिंदी कविता के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। *साहित्य अकादेमी* एवं *ज्ञानपीठ* पुरस्कार सहित अज्ञेय को अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी पुरस्कृत किया गया। सन् 1987 में उनका देहावसान हो गया।

बौद्धिकता की छाप अज्ञेय के संपूर्ण लेखन में मिलती है। उनके लेखन के मूल में वैयक्तिकता की पहचान की समस्या है।

© NCERT not to be republished